हिन्दू धर्म महान

लेखक :– संत रामपाल दास
संचालक :– सतलोक आश्रम, बरवाला जिला–हिसार (हरियाणा)

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

संपूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए संत रामपाल जी महाराज ऐप प्ले स्टोर से डाउनलोड करें।

Google Play

DOWNLOAD APP NOW

पुस्तक गीता तेरा ज्ञान अमृत व जीने की राह फ्री मंगवाने के लिए हमें मिस कॉल करें

81 93 81 93 81

संत रामपाल जी महाराज के मंगल प्रवचन अवश्य देखिए प्रतिदिन साधना चैनल पर

साधना

आध्यात्मिक सामाजिक टी.वी. चैनल

7:30 PM to 8:30 PM

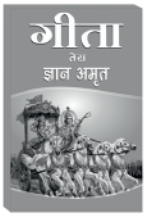

सोशल मीडिया पर हमसे जुड़ने के लिए हमें फॉलो करें।

Spiritualleadersaintrampalji @SaintRampalJiM Sant Rampal Ji Maharaj

{दिनांक : 25 मई सन् 2013 को लेखन कार्य पूरा हुआ।}

प्रथम संस्करण जून 2013 = 10,000

द्वितीय संस्करण अप्रैल 2014 = 20,000

लेखक :- संत रामपाल दास

संचालक :- सतलोक आश्रम, बरवाला जिला-हिसार (हरियाणा)

मुद्रक :- कबीर प्रिंटर्स

C-117, सैक्टर-3, बवाना इन्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली।

प्रकाशक :- प्रचार प्रसार समिति तथा सर्व संगत

सतलोक आश्रम, हिसार-टोहाना रोड़ बरवाला

जिला-हिसार (प्रान्त-हरियाणा) भारत।

सम्पर्क सूत्र :- ☎ 8222880541, 8222880542, 8222880543

8222880544, 8222880545

e-mail : jagatgururampalji@yahoo.com

visit us at - www.jagatgururampalji.org

" हिन्दू धर्म महान "

सर्व प्रथम इसे पढ़ें :-

❖ विश्व में जितने धर्म (पंथ) प्रचलित हैं, उनमें सनातन धर्म (सनातन पंथ जिसे आदि शंकराचार्य के बाद उनके द्वारा बताई साधना करने वालों के जन-समूह को हिन्दू कहा जाने लगा तथा सनातन पंथ को हिन्दू धर्म के नाम से जाना जाने लगा, यह हिन्दू धर्म) सबसे पुरातन है।

इस धर्म की रीढ़ पवित्र चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) तथा पवित्र श्रीमद्भगवद गीता है। प्रारंभ में केवल चार वेदों के आधार से विश्व का मानव धर्म-कर्म किया करता था। ये चारों वेद प्रभुदत्त (God Given) हैं। इन्हीं का सार श्रीमद्भगवद गीता है। इसलिए यह शास्त्र भी प्रभुदत्त (God Given) हुआ।

ध्यान देने योग्य है कि जो ज्ञान स्वयं परमात्मा ने बताया है, वह ज्ञान पूर्ण सत्य होता है। इसलिए ये दोनों शास्त्र निःसंदेह विश्वसनीय हैं। प्रत्येक मानव को इनके अंदर बताई साधना करनी चाहिए। वह साधना शास्त्रविधि अनुसार कही जाती है। इन शास्त्रों में जो साधना नहीं करने को कहा है, उसे जो करता है तो वह शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण कर रहा है जिसके विषय में गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में इस प्रकार कहा है:-

➢ श्लोक नं. 23 :- जो पुरूष यानि साधक शास्त्रविधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है, वह न सिद्धि को प्राप्त होता है, न परम गति यानि पूर्ण मोक्ष को और न सुख को ही।(गीता अध्याय 16 श्लोक 23)

➢ श्लोक नं. 24 :- इससे तेरे लिए इस कर्तव्य यानि जो भक्ति कर्म करने योग्य हैं और अकर्तव्य यानि जो भक्ति कर्म न करने योग्य हैं, इस व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। ऐसा जानकर तू शास्त्रविधि से नियत कर्म यानि जो शास्त्रों में करने को कहा है, वो भक्ति कर्म ही करने योग्य हैं।(गीता अध्याय 16 श्लोक 24)

हिन्दू भाईजान! पढ़ें फोटोकॉपी श्रीमद्भगवत गीता पदच्छेद, अन्वय के अध्याय 16 श्लोक 23-24 की प्रमाण के लिए जो गीता प्रैस गोरखपुर से मुद्रित तथा प्रकाशित है तथा श्री जयदयाल गोयन्दका जी द्वारा अनुवादित है :-

(गीता अध्याय 16 श्लोक 23 की फोटोकॉपी)

यः, शास्त्रविधिम्, उत्सृज्य, वर्तते, कामकारतः,
न, सः, सिद्धिम्, अवाप्नोति, न, सुखम्, न, पराम्, गतिम्॥ २३॥

और—

यः	= जो पुरुष	**सिद्धिम्**	= सिद्धिको
शास्त्रविधिम्	= शास्त्रविधिको	**अवाप्नोति**	= प्राप्त होता है,
उत्सृज्य	= त्यागकर	**न**	= न
कामकारतः	= अपनी इच्छासे मनमाना	**पराम्**	= परम
वर्तते	= आचरण करता है,	**गतिम्**	= गतिको (और)
सः	= वह	**न**	= न
न	= न	**सुखम्**	= सुखको ही।

(गीता अध्याय 16 श्लोक 24 की फोटोकॉपी)

तस्मात्, शास्त्रम्, प्रमाणम्, ते, कार्याकार्यव्यवस्थितौ,
ज्ञात्वा, शास्त्रविधानोक्तम्, कर्म, कर्तुम्, इह, अर्हसि॥ २४॥

तस्मात्	= इससे	**प्रमाणम्**	= प्रमाण है।
ते	= तेरे लिये	**(एवम्)**	= ऐसा
इह	= इस	**ज्ञात्वा**	= जानकर (तू)
कार्याकार्यव्यवस्थितौ	= कर्तव्य और अकर्तव्यकी व्यवस्थामें	**शास्त्रविधानोक्तम्**	= शास्त्रविधिसे नियत
		कर्म	= कर्म (ही)
शास्त्रम्	= शास्त्र (ही)	**कर्तुम्**	= करने
		अर्हसि	= योग्य है।

❖ हिन्दू भाईजानों! अब पढ़ते हैं पवित्र श्रीमद्भगवत गीता से अध्याय 17 श्लोक 1-6 :-

श्लोक 1 :- इस श्लोक में अर्जुन ने गीता ज्ञान देने वाले प्रभु से प्रश्न किया कि :-

➢ हे कृष्ण! जो मनुष्य शास्त्रविधि को त्यागकर श्रद्धा से युक्त हुए देवादि का पूजन करते हैं, उनकी स्थिति फिर कौन-सी है? सात्विक है अथवा राजसी या तामसी? (गीता अध्याय 17 श्लोक 1)

इसका उत्तर श्लोक 2-6 तक दिया है। गीता ज्ञान दाता प्रभु का उत्तर :-

➢ संक्षिप्त में इस प्रकार है :- मनुष्यों की श्रद्धा उनके पूर्व जन्म के संस्कार अनुसार सात्विक, राजसी तथा तामसी होती है। (गीता अध्याय 17 श्लोक 2)

➢ हे भारत! सभी मनुष्यों की श्रद्धा उनके अंतःकरण के अनुरूप होती है। जिसकी जैसी श्रद्धा होती है, वह स्वयं भी वही है यानि वैसे ही स्वभाव का है। (गीता अध्याय 17 श्लोक 3)

➢ सात्विक देवों को पूजते हैं। राजस पुरूष यक्ष और राक्षसों को तथा अन्य जो तामस मनुष्य हैं, वे प्रेत और भूतगणों को पूजते हैं। (गीता अध्याय 17 श्लोक 4)

➢ हे अर्जुन! जो मनुष्य शास्त्रविधि से रहित (केवल मनमाना/मन कल्पित) घोर तप को तपते हैं तथा दम्भ और अहंकार से युक्त कामना, आसक्ति और बल के अभिमान से भी युक्त हैं।(गीता अध्याय 17 श्लोक 5)

➢ तथा जो शरीर रूप से स्थित भूत समुदाय को तथा अंतःकरण में स्थित मुझ को (गीता ज्ञान दाता प्रभु को) भी कृश करने वाले हैं यानि कष्ट पहुँचाते हैं। उन अज्ञानियों को तू असुर स्वभाव वाले जान।(गीता अध्याय 17 श्लोक 6)

यही प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 17-20 में भी है। कहा है कि :-

➢ श्लोक 17 :- वे अपने आप को ही श्रेष्ठ मानने वाले घमण्डी पुरूष धन और मान के मद से युक्त केवल नाम मात्र के यज्ञों द्वारा पाखण्ड से शास्त्रविधि रहित यजन (पूजन) करते हैं।(गीता 16 श्लोक 17)

➢ श्लोक 18 :- अहंकार, बल, घमण्ड, क्रोधादि के परायण और दूसरों की निंदा करने वाले पुरूष अपने और दूसरों के शरीर में स्थित मुझ से (गीता ज्ञान दाता से) द्वेष करने वाले होते हैं।(गीता अध्याय 16 श्लोक 18)

➢ श्लोक 19 :- उन द्वेष करने वाले पापाचारी और क्रूरकर्मी, नराधमों को (नीच मनुष्यों को) मैं संसार में बार-बार आसुरी योनियों में ही डालता हूँ।(गीता अध्याय 16 श्लोक 19)

➢ श्लोक 20 :-हे अर्जुन! वे मूढ़ (मूर्ख) मुझको न प्राप्त होकर ही जन्म-जन्म में आसुरी योनि को प्राप्त होते हैं। फिर उससे भी अति नीच गति को प्राप्त होते हैं यानि घोर नरक में गिरते हैं।

❖ <u>उपरोक्त गीता के श्लोकों का निष्कर्ष</u> :-

गीता अध्याय 17 श्लोक 1 में अर्जुन ने पूछा है कि हे कृष्ण! जो मनुष्य शास्त्रविधि को त्यागकर श्रद्धा से युक्त हुए देवादि का पूजन करते हैं। वे स्वभाव से कैसे होते हैं। अर्जुन ने गीता अध्याय 7 श्लोक 12-15 में पहले सुना था कि तीनों गुणों यानि त्रिगुणमयी माया अर्थात् रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी आदि देवताओं को पूजने वाले उन्हीं तक सीमित हैं। उनकी बुद्धि उनसे ऊपर मुझ गीता ज्ञान दाता की भक्ति तक नहीं जाती। जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख मेरी भक्ति नहीं करते।

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 20-23 में इस प्रकार कहा है :-

इनमें श्लोक 12-15 को फिर दोहराया है। कहा है कि उन-उन भोगों की कामना द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है। वे लोग अपने स्वभाव से प्रेरित होकर उस-उस नियम को

धारण करके यानि लोक वेद दंत कथाओं के आधार से अन्य देवताओं को भजते हैं अर्थात् पूजते हैं। जो गीता में निषेध है कि रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी व अन्य देवी-देवताओं की पूजा नहीं करनी चाहिए। वे लोक वेद के आधार से किसी से सुनकर देवताओं को भजते हैं। यह देवताओं की पूजा शास्त्रविधि रहित यानि मनमाना आचरण करते हैं जिसको गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में व्यर्थ साधना बताया है। उसी के विषय में गीता अध्याय 17 श्लोक 1 में अर्जुन ने प्रश्न किया है कि हे कृष्ण! जो व्यक्ति शास्त्रविधि को त्यागकर अपनी इच्छा से अन्य देवताओं का पूजन करते हैं। उनकी निष्ठा कैसी है यानि उनकी स्थिति राजसी है या सात्विक है या तामसी है?

भावार्थ है कि जो श्री ब्रह्मा जी रजगुण, श्री विष्णु जी सतगुण तथा श्री शिव जी तमगुण व अन्य देवताओं की पूजा करते हैं। वह पूजा है तो शास्त्रविधि रहित, परंतु जो अन्य देवताओं की जो न करने योग्य (अकर्तव्य) पूजा करते हैं, वे स्वभाव से कैसे होते हैं?

❖ गीता ज्ञान देने वाले ने गीता अध्याय 17 श्लोक 2-6 में ऊपर स्पष्ट कर दिया है कि जो सात्विक श्रद्धा वाले यानि अच्छे इंसान हैं, वे तो केवल अन्य देवताओं की पूजा करते हैं। अन्य जो राजसी स्वभाव के हैं, वे राक्षसों व यक्षों की पूजा करते हैं। जो तामसी श्रद्धा-मय यानि स्वभाव के हैं, वे प्रेत और भूतों की पूजा करते हैं। {ध्यान रहे कि श्राद्ध करना, पिंडदान करना, अस्थियों को गंगा में पंडित द्वारा जल प्रवाह करने की क्रिया, तेरहवीं क्रिया, वर्षी क्रिया, ये सब कर्मकांड कहलाता है जो गीता में निषेध बताया है। वेदों में इसे मूर्ख साधना कहा है। प्रमाण :- मार्कण्डेय पुराण में ''रौच्य ऋषि की उत्पत्ति'' अध्याय में रूचि ऋषि ने ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए एकांत में रहकर वेदों अनुसार भक्ति की। जब वे 40 वर्ष के हो गए तो उसके पूर्वज आकाश में दिखाई दिए। वे रूचि ऋषि से बोले (पिता जी, दादा जी, दूसरा दादा जी जो ब्राह्मण यानि ऋषि थे। वे कर्मकांड किया करते थे। जिस कारण से उनकी गति नहीं हुई। वे प्रेत-पितर योनि में कष्ट उठा रहे थे। उन्होंने शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करके जीवन नष्ट किया था। महादुःखी थे। उन्होंने रूचि ऋषि से कहा) बेटा! तूने विवाह क्यों नहीं कराया। हमारे श्राद्ध आदि क्रिया यानि कर्मकांड क्यों नहीं किया? रूचि ऋषि ने उत्तर दिया कि हे पितामहो! वेदों में कर्मकांड को अविद्या (मूर्ख साधना) कहा है। फिर आप मुझे क्यों ऐसा करने को कह रहे हो। पितर बोले, बेटा रूचि! यह सत्य है कि कर्मकांड को वेदों में अविद्या कहा है। आप जो साधना कर रहे हो। यह मोक्ष मार्ग है। हम महाकष्ट में हैं। हमारी गति करा यानि विवाह करा। हमारे पिंडदान आदि कर्म करके भूत जूनी से पीछा छुड़ा। वे स्वयं तो शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करके कर्मकांड करके प्रेत बने थे। अपने बच्चे रूचि को (शास्त्रोक्त भक्ति कर रहा था) सत्य

साधना छुड़वाकर नरक का भागी बना दिया। रूचि ऋषि ने विवाह कराया। फिर कर्मकांड किया। फिर वह भी भूत बना। पिंडदान करने से भूत जूनी छूट जाती है। उसके बाद जीव पशु-पक्षी आदि की योनि प्राप्त करता है। क्या खाक गति कराई? सूक्ष्मवेद में कहा है कि:-

गरीब, भूत योनि छूटत है, पिंड प्रदान करंत। गरीबदास जिंदा कह, नहीं मिले भगवंत।।

गीता अध्याय 9 श्लोक 25 में भी स्पष्ट है। गीता अध्याय 9 श्लोक 25 :- देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं। पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं। भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं यानि भूत बनते हैं। मेरा (गीता ज्ञान दाता का) पूजन करने वाले मुझको प्राप्त होते हैं। इसलिए शास्त्र विधि अनुसार भक्ति करना लाभदायक है। ऐसा करो।}

❖ गीता अध्याय 17 के ही श्लोक 5-6 में स्पष्ट कर दिया है कि जो शास्त्रविधि से रहित मनमाना आचरण करते हुए घोर तप को तपते हैं। ये तथा उपरोक्त अन्य देवताओं यानि रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी तथा अन्य देवी-देवताओं की पूजा करने वाले भूत व प्रेत पूजा (श्राद्ध आदि कर्मकाण्ड करना भूत व प्रेत पूजा है) करते हैं तथा जो यक्ष व राक्षसों की पूजा करते हैं। वे शरीर में स्थित भूतगणों (जो कमलों में विराजमान शक्तियाँ हैं, उनको) और अंतःकरण में स्थित मुझ गीता ज्ञान दाता को कृश करने वाले हैं। उन अज्ञानियों को असुर स्वभाव के जान। गीता अध्याय 16 श्लोक 17-20 में आप जी ने इसी विषय को पढ़ा। कहा है कि जो शास्त्रविधि रहित पूजन करते हैं, वे अपने शरीर में तथा दूसरों के शरीर में स्थित मुझ (गीता ज्ञान दाता) से द्वेष करने वाले हैं क्योंकि वे अन्य देवताओं की पूजा करते हैं। गीता ज्ञान दाता यानि काल की पूजा नहीं करते। इसलिए द्वेष करने वाले कहा है। उन द्वेष करने वाले यानि श्री ब्रह्मा जी रजगुण, श्री विष्णु जी सतगुण तथा श्री शिव जी तमगुण जो काल ब्रह्म की तीन प्रधान शक्तियाँ हैं तथा अन्य देवी-देवताओं की पूजा करने वाले पापाचारी, क्रूरकर्मी, नराधमों को मैं बार-बार आसुरी योनियों में डालता हूँ।(गीता अध्याय 16 श्लोक 17-19)

❖ गीता अध्याय 16 श्लोक 20 में कहा है कि हे अर्जुन! वे मूढ़ (मूर्ख) मुझको न प्राप्त होकर जन्म-जन्म में आसुरी योनि को प्राप्त होते हैं। फिर उससे भी अति नीच गति को प्राप्त होते हैं यानि घोर नरक में गिरते हैं।

यदि कोई कहे कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की पूजा उपरोक्त अध्यायों में निषेध नहीं कही है, अन्य देवताओं की पूजा के विषय में कहा है।

उत्तर :- इसका उत्तर यह है कि पूरी गीता में कहीं भी श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की पूजा करने को नहीं कहा है। इसलिए इनकी पूजा करना गीता शास्त्र

में न होने के कारण शास्त्रविधि रहित हुआ जो गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 के अनुसार व्यर्थ सिद्ध होता है। फिर हिन्दू भाईयों ने तो कोई भी देवी-देवता नहीं छोड़ा है जिसकी ये पूजा न करते हों। इति सिद्धम ''हिन्दू भाईजान नहीं समझे गीता ज्ञान-विज्ञान''।

❖ उपरोक्त गीता के प्रकरण को समझने के लिए यानि प्रमाण के लिए कृपया पढ़ें और आँखों देखें उपरोक्त श्लोकों की फोटोकापियाँ जो श्रीमद्भगवद गीता पदच्छेद, अन्वय से हैं जो भारत की प्रसिद्ध व विश्वसनीय गीता प्रैस गोरखपुर से मुद्रित तथा प्रकाशित है तथा श्री जयदयाल गोयन्दका द्वारा अनुवादित है :-

(गीता अध्याय 17 श्लोक 1 की फोटोकॉपी)

ये, शास्त्रविधिम्, उत्सृज्य, यजन्ते, श्रद्धया, अन्विताः,
तेषाम्, निष्ठा, तु, का, कृष्ण, सत्त्वम्, आहो, रजः, तमः॥ १॥

इस प्रकार भगवान्के वचनोंको सुनकर अर्जुन बोले—

कृष्ण	= हे कृष्ण!	**तेषाम्**	= उनकी
ये	= जो मनुष्य	**निष्ठा**	= स्थिति
शास्त्रविधिम्	= शास्त्रविधिको	**तु**	= फिर
उत्सृज्य	= त्यागकर	**का**	= कौन-सी है?
श्रद्धया	= श्रद्धासे	**सत्त्वम्**	= सात्त्विकी है
अन्विताः	= युक्त हुए	**आहो**	= अथवा
यजन्ते	= देवादिका पूजन करते हैं,	**रजः**	= राजसी (किंवा)
		तमः	= तामसी?

(गीता अध्याय 17 श्लोक 2 की फोटोकॉपी)

त्रिविधा, भवति, श्रद्धा, देहिनाम्, सा, स्वभावजा,
सात्त्विकी, राजसी, च, एव, तामसी, च, इति, ताम्, शृणु॥ २॥

इस प्रकार अर्जुनके पूछनेपर श्रीकृष्णभगवान् बोले—हे अर्जुन!—

देहिनाम्	= मनुष्योंकी	**च**	= तथा
सा	= वह (शास्त्रीय संस्कारोंसे रहित केवल)	**तामसी**	= तामसी—
		इति	= ऐसे
		त्रिविधा	= तीनों प्रकारकी
स्वभावजा	= स्वभावसे उत्पन्न*	**एव**	= ही
श्रद्धा	= श्रद्धा	**भवति**	= होती है।
सात्त्विकी	= सात्त्विकी	**ताम्**	= उसको (तू)
च	= और	**(मत्तः)**	= मुझसे
राजसी	= राजसी	**शृणु**	= सुन।

(गीता अध्याय 17 श्लोक 3 की फोटोकॉपी)

सत्त्वानुरूपा, सर्वस्य, श्रद्धा, भवति, भारत,
श्रद्धामयः, अयम्, पुरुषः, यः, यच्छ्रद्धः, सः, एव, सः ॥ ३ ॥

भारत = हे भारत!
सर्वस्य = सभी मनुष्योंकी
श्रद्धा = श्रद्धा
सत्त्वानुरूपा = उनके अन्तःकरणके अनुरूप
भवति = होती है।
अयम् = यह
पुरुषः = पुरुष
श्रद्धामयः = श्रद्धामय है,
(अतः) = इसलिये
यः = जो पुरुष
यच्छ्रद्धः = जैसी श्रद्धावाला है,
सः = वह स्वयं
एव = भी
सः = वही है।

(गीता अध्याय 17 श्लोक 4 की फोटोकॉपी)

यजन्ते, सात्त्विकाः, देवान्, यक्षरक्षांसि, राजसाः,
प्रेतान्, भूतगणान्, च, अन्ये, यजन्ते, तामसाः, जनाः ॥ ४ ॥

उनमें—

सात्त्विकाः = सात्त्विक पुरुष
देवान् = देवोंको
यजन्ते = पूजते हैं,
राजसाः = राजस पुरुष
यक्षरक्षांसि = यक्ष और राक्षसोंको (तथा)
अन्ये = अन्य (जो)
तामसाः = तामस
जनाः = मनुष्य हैं, (वे)
प्रेतान् = प्रेत
च = और
भूतगणान् = भूतगणोंको
यजन्ते = पूजते हैं।

(गीता अध्याय 17 श्लोक 5 की फोटोकॉपी)

अशास्त्रविहितम्, घोरम्, तप्यन्ते, ये, तपः, जनाः,
दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः, कामरागबलान्विताः ॥ ५ ॥

और हे अर्जुन!—

ये = जो
जनाः = मनुष्य
अशास्त्रविहितम् = शास्त्रविधिसे रहित (केवल मनः-कल्पित)
घोरम् = घोर
तपः = तपको
तप्यन्ते = तपते हैं (तथा)
दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः = दम्भ और अहंकारसे युक्त (एवं)
कामरागबलान्विताः = कामना, आसक्ति और बलके अभिमानसे भी युक्त हैं—

(गीता अध्याय 17 श्लोक 6 की फोटोकॉपी)

कर्शयन्तः, शरीरस्थम्, भूतग्रामम्, अचेतसः, माम्,
च, एव, अन्तःशरीरस्थम्, तान्, विद्धि, आसुरनिश्चयान्॥ ६॥

तथा जो—

शरीरस्थम् = शरीररूपसे स्थित
भूतग्रामम् = भूत-समुदायको[१]
च = और
अन्तःशरीरस्थम् = अन्तःकरणमें स्थित
माम् = मुझ परमात्माको
एव = भी
कर्शयन्तः = कृश करनेवाले हैं[२],
तान् = उन
अचेतसः = अज्ञानियोंको (तू)
आसुरनिश्चयान् = आसुर-स्वभाववाले
विद्धि = जान।

(गीता अध्याय 16 श्लोक 17 की फोटोकॉपी)

आत्मसम्भाविताः, स्तब्धाः, धनमानमदान्विताः,
यजन्ते, नामयज्ञैः, ते, दम्भेन, अविधिपूर्वकम्॥ १७॥

तथा—

ते = वे
आत्मसम्भाविताः = अपने-आपको ही श्रेष्ठ माननेवाले
स्तब्धाः = घमण्डी पुरुष
धनमानमदान्विताः = धन और मानके मदसे युक्त होकर
नामयज्ञैः = केवल नाममात्रके यज्ञोंद्वारा
दम्भेन = पाखण्डसे
अविधिपूर्वकम् = शास्त्रविधिरहित
यजन्ते = यजन करते हैं।

(गीता अध्याय 16 श्लोक 18 की फोटोकॉपी)

अहङ्कारम्, बलम्, दर्पम्, कामम्, क्रोधम्, च, संश्रिताः,
माम्, आत्मपरदेहेषु, प्रद्विषन्तः, अभ्यसूयकाः॥ १८॥

तथा वे—

अहङ्कारम् = अहंकार,
बलम् = बल,
दर्पम् = घमण्ड,
कामम् = कामना, (और)
क्रोधम् = क्रोधादिके
संश्रिताः = परायण
च = और
अभ्यसूयकाः = दूसरोंकी निन्दा करनेवाले पुरुष
आत्मपरदेहेषु = अपने और दूसरोंके शरीरमें (स्थित)
माम् = मुझ अन्तर्यामीसे
प्रद्विषन्तः = द्वेष करनेवाले होते हैं।

(गीता अध्याय 16 श्लोक 19 की फोटोकॉपी)

तान्, अहम्, द्विषतः, क्रूरान्, संसारेषु, नराधमान्,
क्षिपामि, अजस्रम्, अशुभान्, आसुरीषु, एव, योनिषु॥ १९॥

ऐसे—

तान्	= उन	**संसारेषु**	= संसारमें
द्विषतः	= द्वेष करनेवाले	**अजस्रम्**	= बार-बार
अशुभान्	= पापाचारी (और)	**आसुरीषु**	= आसुरी
क्रूरान्	= क्रूरकर्मी	**योनिषु**	= योनियोंमें
नराधमान्	= नराधमोंको	**एव**	= ही
अहम्	= मैं	**क्षिपामि**	= डालता हूँ।

(गीता अध्याय 16 श्लोक 20 की फोटोकॉपी)

आसुरीम्, योनिम्, आपन्नाः, मूढाः, जन्मनि, जन्मनि,
माम्, अप्राप्य, एव, कौन्तेय, ततः, यान्ति, अधमाम्, गतिम्॥ २०॥

इसलिये—

कौन्तेय	= हे अर्जुन!	**योनिम्**	= योनिको
मूढाः	= वे मूढ	**आपन्नाः**	= प्राप्त होते हैं, (फिर)
माम्	= मुझको	**ततः**	= उससे भी
अप्राप्य	= न प्राप्त होकर	**अधमाम्**	= अति नीच
एव*	= ही	**गतिम्**	= गतिको
जन्मनि	= जन्म-	**यान्ति**	= प्राप्त होते हैं अर्थात् घोर नरकोंमें पड़ते हैं।
जन्मनि	= जन्ममें		
आसुरीम्	= आसुरी		

(गीता अध्याय 16 श्लोक 23 की फोटोकॉपी)

यः, शास्त्रविधिम्, उत्सृज्य, वर्तते, कामकारतः,
न, सः, सिद्धिम्, अवाप्नोति, न, सुखम्, न, पराम्, गतिम्॥ २३॥

और—

यः	= जो पुरुष	**सिद्धिम्**	= सिद्धिको
शास्त्रविधिम्	= शास्त्रविधिको	**अवाप्नोति**	= प्राप्त होता है,
उत्सृज्य	= त्यागकर	**न**	= न
कामकारतः	= अपनी इच्छासे मनमाना	**पराम्**	= परम
वर्तते	= आचरण करता है,	**गतिम्**	= गतिको (और)
सः	= वह	**न**	= न
न	= न	**सुखम्**	= सुखको ही।

(गीता अध्याय 16 श्लोक 24 की फोटोकॉपी)

तस्मात्, शास्त्रम्, प्रमाणम्, ते, कार्याकार्यव्यवस्थितौ,
ज्ञात्वा, शास्त्रविधानोक्तम्, कर्म, कर्तुम्, इह, अर्हसि॥ २४॥

तस्मात्	= इससे	**प्रमाणम्**	= प्रमाण है।
ते	= तेरे लिये	**(एवम्)**	= ऐसा
इह	= इस	**ज्ञात्वा**	= जानकर (तू)
कार्याकार्यव्यवस्थितौ	= कर्तव्य और अकर्तव्यकी व्यवस्थामें	**शास्त्रविधानोक्तम्**	= शास्त्रविधिसे नियत
		कर्म	= कर्म (ही)
शास्त्रम्	= शास्त्र (ही)	**कर्तुम्**	= करने
		अर्हसि	= योग्य है।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 12 की फोटोकॉपी)

ये, च, एव, सात्त्विकाः, भावाः, राजसाः, तामसाः, च, ये,
मत्तः, एव, इति, तान्, विद्धि, न, तु, अहम्, तेषु, ते, मयि॥ १२॥

तथा—

च	= और	**तान्**	= उन सबको (तू)
एव	= भी	**मत्तः, एव**	= मुझसे ही (होनेवाले हैं)
ये	= जो	**इति**	= ऐसा
सात्त्विकाः	= सत्त्वगुणसे उत्पन्न होनेवाले	**विद्धि**	= जान
भावाः	= भाव हैं (और)	**तु**	= परंतु (वास्तवमें)[१]
ये	= जो	**तेषु**	= उनमें
राजसाः	= रजोगुणसे	**अहम्**	= मैं (और)
च	= तथा	**ते**	= वे
तामसाः	= तमोगुणसे होनेवाले भाव हैं,	**मयि**	= मुझमें
		न	= नहीं हैं।

विशेष :- गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि रजगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति, सतगुण विष्णु जी से स्थिति तथा तमगुण शिव जी से संहार होता है। यह सब मेरे लिए है। मेरा आहार बनता रहे। गीता ज्ञान दाता काल है जो स्वयं गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में अपने को काल कहता है। यह श्रापवश एक लाख मानव को प्रतिदिन खाता है। इसलिए कहा है कि जो रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी से हो रहा है। उसका निमित मैं हूँ। परंतु मैं इनसे (ब्रह्मा, विष्णु, महेश से) भिन्न हूँ।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 13 की फोटोकॉपी)

त्रिभिः, गुणमयैः, भावैः, एभिः, सर्वम्, इदम्, जगत्,
मोहितम्, न, अभिजानाति, माम्, एभ्यः, परम्, अव्ययम्॥ १३॥

किंतु—

गुणमयैः	= गुणोंके कार्यरूप सात्त्विक, राजस और तामस—	**मोहितम्**	= मोहित हो रहा है, (इसीलिये)
एभिः	= इन	**एभ्यः**	= इन तीनों गुणोंसे
त्रिभिः	= तीनों प्रकारके	**परम्**	= परे
भावैः	= भावोंसे[२]	**माम्**	= मुझ
इदम्	= यह	**अव्ययम्**	= अविनाशीको
सर्वम्	= सारा		
जगत्	= संसार— प्राणिसमुदाय	**न**	= नहीं
		अभिजानाति	= जानता।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 14 की फोटोकॉपी)

दैवी, हि, एषा, गुणमयी, मम, माया, दुरत्यया,
माम्, एव, ये, प्रपद्यन्ते, मायाम्, एताम्, तरन्ति, ते॥ १४॥

हि	= क्योंकि	**माम्**	= मुझको
एषा	= यह	**एव**	= ही (निरन्तर)
दैवी	= अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत	**प्रपद्यन्ते**	= भजते हैं,
		ते	= वे
गुणमयी	= त्रिगुणमयी	**एताम्**	= इस
मम	= मेरी	**मायाम्**	= मायाको
माया	= माया		
दुरत्यया	= बड़ी दुस्तर है; (परंतु)	**तरन्ति**	= उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं।
ये	= जो पुरुष (केवल)		

(गीता अध्याय 7 श्लोक 15 की फोटोकॉपी)

न, माम्, दुष्कृतिनः, मूढाः, प्रपद्यन्ते, नराधमाः,
मायया, अपहृतज्ञानाः, आसुरम्, भावम्, आश्रिताः ॥ १५ ॥

ऐसा सुगम उपाय होनेपर भी—

मायया = मायाके द्वारा
अपहृतज्ञानाः = जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, (ऐसे)
आसुरम्, भावम् = आसुर स्वभावको
आश्रिताः = धारण किये हुए,
नराधमाः = मनुष्योंमें नीच,
दुष्कृतिनः = दूषित कर्म करनेवाले
मूढाः = मूढ़लोग
माम् = मुझको
न = नहीं
प्रपद्यन्ते = भजते

विशेष :- इस श्लोक 15 में स्पष्ट किया है कि जिन साधकों की आस्था रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी में अति दृढ़ है तथा जिनका ज्ञान लोक वेद (दंत कथा) के आधार से इस त्रिगुणमयी माया के द्वारा हरा जा चुका है। वे इन्हीं तीनों प्रधान देवताओं व अन्य देवताओं की भक्ति पर दृढ़ हैं। इनसे ऊपर मुझे (गीता ज्ञान दाता को) नहीं भजते। ऐसे व्यक्ति राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच (नराधमाः) दूषित कर्म करने वाले मूर्ख हैं। ये मुझको (गीता ज्ञान देने वाले काल ब्रह्म को) नहीं भजते।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 20 की फोटोकॉपी)

कामैः, तैः, तैः, हृतज्ञानाः, प्रपद्यन्ते, अन्यदेवताः,
तम्, तम्, नियमम्, आस्थाय, प्रकृत्या, नियताः, स्वया ॥ २० ॥

और हे अर्जुन!—

तैः, तैः = उन-उन
कामैः = भोगोंकी कामनाद्वारा
हृतज्ञानाः = जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, (वे लोग)
स्वया = अपने
प्रकृत्या = स्वभावसे
नियताः = प्रेरित होकर
तम्, तम् = उस-उस
नियमम् = नियमको
आस्थाय = धारण करके[२]
अन्यदेवताः = अन्य देवताओंको
प्रपद्यन्ते = भजते हैं अर्थात् पूजते हैं।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 21 की फोटोकॉपी)

यः, यः, याम्, याम्, तनुम्, भक्तः, श्रद्धया, अर्चितुम्, इच्छति,
तस्य, तस्य, अचलाम्, श्रद्धाम्, ताम्, एव, विदधामि, अहम्॥ २१ ॥

यः, यः	= जो-जो	**तस्य**	= उस-
भक्तः	= सकाम भक्त	**तस्य**	= उस भक्तकी
याम्, याम्	= जिस-जिस	**श्रद्धाम्**	= श्रद्धाको
तनुम्	= देवताके स्वरूपको	**अहम्**	= मैं
श्रद्धया	= श्रद्धासे	**ताम्, एव**	= उसी देवताके प्रति
अर्चितुम्	= पूजना	**अचलाम्**	= स्थिर
इच्छति	= चाहता है;	**विदधामि**	= करता हूँ।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 22 की फोटोकॉपी)

सः, तया, श्रद्धया, युक्तः, तस्य, आराधनम्, ईहते,
लभते, च, ततः, कामान्, मया, एव, विहितान्, हि, तान्॥ २२ ॥

तथा—

सः	= वह पुरुष	**ततः**	= उस देवतासे
तया	= उस	**मया**	= मेरे द्वारा
श्रद्धया	= श्रद्धासे	**एव**	= ही
युक्तः	= युक्त होकर	**विहितान्**	= विधान किये हुए
तस्य	= उस देवताका	**तान्**	= उन
आराधनम्	= पूजन	**कामान्**	= इच्छित भोगोंको
ईहते	= करता है	**हि**	= निःसन्देह
च	= और	**लभते**	= प्राप्त करता है।

(गीता अध्याय 7 श्लोक 23 की फोटोकॉपी)

अन्तवत्, तु, फलम्, तेषाम्, तत्, भवति, अल्पमेधसाम्,
देवान्, देवयजः, यान्ति, मद्भक्ताः, यान्ति, माम्, अपि॥ २३॥

तु	= परंतु	**देवान्**	= देवताओंको
तेषाम्	= उन	**यान्ति**	= प्राप्त होते हैं (और)
अल्पमेधसाम्	= अल्प बुद्धिवालोंका		
तत्	= वह	**मद्भक्ताः**	= मेरे भक्त (चाहे जैसे ही भजें, अन्तमें वे)
फलम्	= फल		
अन्तवत्	= नाशवान्		
भवति	= है (तथा वे)	**माम्**	= मुझको
देवयजः	= देवताओंको पूजनेवाले	**अपि**	= ही
		यान्ति	= प्राप्त होते हैं।

(गीता अध्याय 9 श्लोक 25 की फोटोकॉपी)

यान्ति, देवव्रताः, देवान्, पितॄन्, यान्ति, पितृव्रताः,
भूतानि, यान्ति, भूतेज्याः, यान्ति, मद्याजिनः, अपि, माम्॥ २५॥

कारण यह नियम है कि—

देवव्रताः	= देवताओंको पूजनेवाले	**यान्ति**	= प्राप्त होते हैं (और)
देवान्	= देवताओंको	**मद्याजिनः**	= मेरा पूजन करनेवाले भक्त
यान्ति	= प्राप्त होते हैं,		
पितृव्रताः	= पितरोंको पूजनेवाले	**माम्**	= मुझको
		अपि	= ही
पितॄन्	= पितरोंको	**यान्ति**	= प्राप्त होते हैं। (इसीलिये मेरे भक्तोंका पुनर्जन्म नहीं होता।*)
यान्ति	= प्राप्त होते हैं,		
भूतेज्याः	= भूतोंको पूजनेवाले		
भूतानि	= भूतोंको		

❖ विशेष जानकारी :- प्रश्न :- अब हिन्दू भाईजान कहेंगे कि पुराणों में श्राद्ध करना, कर्मकाण्ड करना बताया है। तीर्थों पर जाना पुण्य बताया है। ऋषियों ने तप किए। क्या उनको भी हम गलत मानें? श्री ब्रह्मा जी ने, श्री विष्णु जी तथा शिव जी ने भी तप किए। क्या वे भी गलत करते रहे हैं?

उत्तर :- ऊपर श्रीमद्भगवद गीता से स्पष्ट कर दिया है कि जो घोर तप करते हैं, वे मूर्ख हैं, पापाचारी क्रूरकर्मी हैं। चाहे ब्रह्मा हो, चाहे विष्णु हो, चाहे शिव हो या कोई ऋषि हो। उनको वेदों का क-ख का भी ज्ञान नहीं था। अन्य को तो होगा कहाँ से। गीता में तीर्थों पर जाना कहीं नहीं लिखा है। इसलिए तीर्थ भ्रमण गलत है। शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण है जो गीता में व्यर्थ कहा है।

प्रश्न :- क्या पुराण शास्त्र नहीं है?

उत्तर :- पुराणों का ज्ञान ऋषियों का अपना अनुभव है। वेद व गीता प्रभुदत्त (God Given) ज्ञान है जो पूर्ण सत्य है। ऋषियों ने वेदों को पढ़ा। ठीक से नहीं समझा। जिस कारण से लोकवेद के (एक-दूसरे से सुने ज्ञान के) आधार से साधना की। कुछ ज्ञान वेदों से लिया यानि ओम् (ॐ) नाम का जाप यजुर्वेद अध्याय 40 श्लोक 15 से लिया। तप करने का ज्ञान ब्रह्मा जी से लिया। खिचड़ी ज्ञान के अनुसार साधना करके सिद्धियाँ प्राप्त करके किसी को श्राप, किसी को आशीर्वाद देकर जीवन नष्ट कर गए। गीता में कहा है कि जो मनमाना आचरण यानि शास्त्रविधि त्यागकर साधना करते हैं। उनको कोई लाभ नहीं होता। जो घोर तप को तपते हैं, वे राक्षस स्वभाव के हैं।

प्रमाण के लिए :- एक बार पांडव वनवास में थे। दुर्योधन के कहने से दुर्वासा ऋषि अठासी हजार ऋषियों को लेकर पाण्डवों के यहाँ गया। मन में दोष लेकर गया था कि पांडव मेरी मन इच्छा अनुसार भोजन करवा नहीं पाएँगे। मैं उनको श्राप दे दूँगा। वे नष्ट हो जाएँगे।

➢ विचार करो :- दुर्वासा महान तपस्वी था। उस घोर तप करने वाले पापाचारी नराधम ने क्या जुल्म करने की ठानी। दुःखियों को और दुःखी करने के उद्देश्य से गया। क्या ये राक्षसी कर्म नहीं था? क्या यह क्रूरकर्मी नराधम नहीं था?

इसी दुर्वासा ऋषि ने बच्चों के मजाक करने से क्रोधवश यादवों को श्राप दे दिया। गलती तीन-चार बच्चों ने (प्रद्यूमन पुत्र श्री कृष्ण आदि ने) की, श्राप पूरे यादव कुल का नाश होने का दे दिया। दुर्वासा के श्राप से 56 करोड़ (छप्पन करोड़) यादव आपस में लड़कर मर गए। श्री कृष्ण जी भी मारे गए। क्या ये राक्षसी कर्म दुर्वासा का नहीं था?

❖ <u>अन्य कर्म पुराण की रचना करने वाले ऋषियों के सुनो</u> :-

वशिष्ठ ऋषि ने एक राजा को राक्षस बनने का श्राप दे दिया। वह राक्षस बनकर दुःखी हुआ। वशिष्ठ ऋषि ने अन्य राजा को इसलिए मरने का श्राप दे दिया जिसने ऋषि वशिष्ठ से यज्ञ अनुष्ठान न करवाकर अन्य से करवा लिया। उस राजा ने वशिष्ठ ऋषि को

मरने का श्राप दे दिया। दोनों की मृत्यु हो गई। वशिष्ठ जी का पुनः जन्म इस प्रकार हुआ जो पुराण कथा है :- दो ऋषि जंगल में तप कर रहे थे। एक अप्सरा स्वर्ग से आई। बहुत सुंदर थी। उसे देखने मात्र से दोनों ऋषियों का वीर्य संखलन (वीर्यपात) हो गया। दोनों ने बारी-बारी जाकर कुटिया में रखे खाली घड़े में वीर्य छोड़ दिया। उससे एक तो वशिष्ठ ऋषि वाली आत्मा का पुनर्जन्म हुआ। नाम वशिष्ठ ही रखा गया। दूसरे का कुंभक ऋषि नाम रखा।

विश्वामित्र ऋषि के कर्म :- राज त्यागकर जंगल में गया। घोर तप किया। सिद्धियाँ प्राप्त की। वशिष्ठ ऋषि ने उसे राज-ऋषि कहा। उससे क्षुब्ध (क्रोधित) होकर डण्डों व पत्थरों से वशिष्ठ जी के सौ पुत्रों को मार दिया। जब वशिष्ठ ऋषि ने उसे ब्रह्म-ऋषि कहा तो खुश हुआ क्योंकि विश्वामित्र राज-ऋषि कहने से अपना अपमान मानता था। ब्रह्म-ऋषि कहलाना चाहता था।

विचार करो! क्या ये राक्षसी कर्म नहीं हैं? ऐसे-ऐसे ऋषियों की रचनाएँ हैं अठारह पुराण।

एक समय ऋषि विश्वामित्र जंगल में कुटिया में बैठा था। एक मैनका नामक उर्वशी स्वर्ग से आकर कुटी के पास घूम रही थी। विश्वामित्र उस पर आसक्त हो गया। पति-पत्नी व्यवहार किया। एक कन्या का जन्म हुआ। नाम शकुन्तला रखा। कन्या छः महीने की हुई तो उर्वशी स्वर्ग में चली गई। बोली मेरा काम हो गया। तेरी औकात का पता करने इन्द्र ने भेजी थी, वह देख ली। कहते हैं विश्वामित्र उस कन्या को कन्व ऋषि की कुटिया के सामने रखकर फिर से गहरे जंगल में तप करने गया। पाल-पोषकर राजा दुष्यंत से विवाह किया।

➢ विचार करो :- पहले उसी गहरे जंगल में घोर तप करके आया ही था। आते ही वशिष्ठ जी के पुत्र मार डाले। उर्वशी से उलझ गया। नाश करवाकर फिर डले ढोने गया। फिर क्या वह गीता पढ़कर गया था। उसी लोक वेद के अनुसार शास्त्रविधि रहित मनमाना आचरण किया।

एक अगस्त ऋषि हुआ है। उसने तप करके सिद्धियाँ प्राप्त की। सातों समुन्दरों को एक घूंट में पी लिया। फिर वापिस भर दिया अपनी महिमा बनाने के लिए। क्या यही मुक्ति है?

ऐसे-ऐसे ऋषियों की अपनी विचारधारा पुराण हैं। पुराणों में जो ज्ञान वेदों व गीता से मेल नहीं करता, वह लोक वेद है। उसे त्याग देना चाहिए।

इन ऋषियों से प्राप्त लोक वेद को वर्तमान पवित्र हिन्दू धर्म के वर्तमान धर्म प्रचारक, गीता मनीषी, आचार्य तथा शंकराचार्य व महामंडलेश्वर प्रचार कर रहे हैं तथा हिन्दू धर्म के अनुयाई यानि हिन्दू उसी अज्ञान को ढो रहे हैं। जो गीता में मनमाना आचरण बताया है जो व्यर्थ साधना कही है।

''गीता ज्ञान देने वाले ने अपने से अन्य परमेश्वर की शरण में जाने को कहा है''

वर्तमान के हिन्दू धर्म के गीता मनीषियों व शंकराचार्यों को यह भी नहीं पता कि गीता ज्ञान देने वाले ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में अपने से अन्य किस परमेश्वर की शरण में जाने को कहा है। ये कहते हैं कि श्री विष्णु उर्फ श्री कृष्ण यानि गीता ज्ञान दाता से अन्य कोई भगवान ही नहीं है।

वास्तविकता इस प्रकार है :-

''हिन्दू भाईजान नहीं समझे गीता का ज्ञान''

गीता का ज्ञान बताने वाले ने गीता अध्याय 7 के श्लोक 29 में अर्जुन को बताया था कि ''जो साधक जरा (वृद्धावस्था) मरण (मृत्यु) से छुटकारा (मोक्ष) चाहते हैं व तत् ब्रह्म से, सम्पूर्ण आध्यात्म से तथा सर्व कर्मों से परिचित हैं।

अर्जुन ने गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में प्रश्न किया कि गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में जो तत् ब्रह्म कहा है, वह क्या है? इसका उत्तर गीता ज्ञान देने वाले प्रभु ने गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में बताया है कि वह ''परम अक्षर ब्रह्म'' है।

इसके बाद गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 श्लोक 5, 7 में अर्जुन को अपनी भक्ति करने को कहा है तथा इसी अध्याय 8 श्लोक 8-9-10 में अपने से अन्य परम अक्षर ब्रह्म यानि सच्चिदानंद घन ब्रह्म की भक्ति करने को कहा है। यह भी स्पष्ट किया है कि जो मेरी भक्ति करता है, वह मुझे प्राप्त होता है। जो तत् ब्रह्म यानि परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करता है, वह उसी को प्राप्त होता है। फिर अपनी भक्ति का मंत्र ओम् (ॐ) यह एक अक्षर बताया है तथा तत् ब्रह्म (परम अक्षर ब्रह्म/दिव्य परमेश्वर सच्चिदानंद घन ब्रह्म) की भक्ति का तीन नाम का ''ओम् (ॐ) तत् सत्'' बताया है।

➢ गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ने उसी परम अक्षर ब्रह्म की शरण में जाने से परम शांति को तथा (शाश्वतम् स्थानम्) सनातन परम धाम (जिसे संत गरीबदास जी ने सत्यलोक/अमरलोक कहा है।) को प्राप्त होना संभव बताया है। उपरोक्त ज्ञान संत रामपाल जी द्वारा बताया व गीता शास्त्र में सत्संगों के माध्यम से वीडियो में दिखाया है। हमें यानि हिन्दुओं को दिखाया व निष्कर्ष निकालकर समझाया है। जिसको हमारे हिन्दू धर्म प्रचारक/गुरूजन/मनीषी और मंडलेश्वर नहीं समझ सके। दास (लेखक) ने समझा है।

❖ हिन्दू भाई जान कृपया पढ़ें फोटोकॉपी उपरोक्त श्लोकों की :-

(गीता अध्याय 7 श्लोक 29 की फोटोकॉपी)

जरामरणमोक्षाय, माम्, आश्रित्य, यतन्ति, ये,
ते, ब्रह्म, तत्, विदुः, कृत्स्नम्, अध्यात्मम्, कर्म, च, अखिलम्॥ २९॥

और—

ये	= जो	**ब्रह्म**	= ब्रह्मको,
माम्	= मेरे	**कृत्स्नम्**	= सम्पूर्ण
आश्रित्य	= शरण होकर		
जरामरणमोक्षाय	= जरा और मरणसे छूटनेके लिये	**अध्यात्मम्**	= अध्यात्मको
		च	= तथा
यतन्ति	= यत्न करते हैं,	**अखिलम्**	= सम्पूर्ण
ते	= वे (पुरुष)	**कर्म**	= कर्मको
तत्	= उस	**विदुः**	= जानते हैं।

(गीता अध्याय 8 श्लोक 1 की फोटोकॉपी)

किम्, तत्, ब्रह्म, किम्, अध्यात्मम्, किम्, कर्म, पुरुषोत्तम,
अधिभूतम्, च, किम्, प्रोक्तम्, अधिदैवम्, किम्, उच्यते॥ १॥

इस प्रकार भगवान्के वचनोंको न समझकर अर्जुन बोले—

पुरुषोत्तम	= हे पुरुषोत्तम!	**अधिभूतम्**	= अधिभूत (नामसे)
तत्	= वह		
ब्रह्म	= ब्रह्म	**किम्**	= क्या
किम्	= क्या है?	**प्रोक्तम्**	= कहा गया है
अध्यात्मम्	= अध्यात्म	**च**	= और
किम्	= क्या है?	**अधिदैवम्**	= अधिदैव
कर्म	= कर्म	**किम्**	= किसको
किम्	= क्या है?	**उच्यते**	= कहते हैं?

(गीता अध्याय 8 श्लोक 3 की फोटोकॉपी)

अक्षरम्, ब्रह्म, परमम्, स्वभावः, अध्यात्मम्, उच्यते,
भूतभावोद्भवकरः, विसर्गः, कर्मसञ्ज्ञितः ॥ ३ ॥

इस प्रकार अर्जुनके प्रश्न करनेपर श्रीभगवान् बोले, अर्जुन!—

परमम्	= परम	**उच्यते**	= कहा जाता है (तथा)
अक्षरम्	= अक्षर	**भूतभावोद्भवकरः**	= भूतोंके भावको उत्पन्न करनेवाला (जो)
ब्रह्म	= 'ब्रह्म' है,	**विसर्गः**	= त्याग है, (वह)
स्वभावः	= अपना स्वरूप अर्थात् जीवात्मा	**कर्मसञ्ज्ञितः**	= 'कर्म' नामसे कहा गया है।
अध्यात्मम्	= 'अध्यात्म' (नामसे)		

(गीता अध्याय 8 श्लोक 5 की फोटोकॉपी)

अन्तकाले, च, माम्, एव, स्मरन्, मुक्त्वा, कलेवरम्,
यः, प्रयाति, सः, मद्भावम्, याति, न, अस्ति, अत्र, संशयः ॥ ५ ॥

और

यः	= जो पुरुष	**सः**	= वह
अन्तकाले, च	= अन्तकालमें भी	**मद्भावम्**	= मेरे साक्षात् स्वरूपको
माम्	= मुझको	**याति**	= प्राप्त होता है—
एव	= ही	**अत्र**	= इसमें (कुछ भी)
स्मरन्	= स्मरण करता हुआ	**संशयः**	= संशय
कलेवरम्	= शरीरको	**न**	= नहीं
मुक्त्वा	= त्यागकर	**अस्ति**	= है।
प्रयाति	= जाता है,		

(गीता अध्याय 8 श्लोक 7 की फोटोकॉपी)

[निरन्तर भगवच्चिन्तन करते हुए युद्ध करनेकी आज्ञा एवं उसका फल]

तस्मात्, सर्वेषु, कालेषु, माम्, अनुस्मर, युध्य, च,
मयि, अर्पितमनोबुद्धिः, माम्, एव, एष्यसि, असंशयम्॥ ७॥

तस्मात् = इसलिये (हे अर्जुन! तू)
सर्वेषु = सब
कालेषु = समयमें (निरन्तर)
माम् = मेरा
अनुस्मर = स्मरण कर
च = और
युध्य = युद्ध भी कर। (इस प्रकार)
मयि = मुझमें
अर्पितमनोबुद्धिः = अर्पण किये हुए मन-बुद्धिसे युक्त होकर (तू)
असंशयम् = निःसन्देह
माम् = मुझको
एव = ही
एष्यसि = प्राप्त होगा।

(गीता अध्याय 8 श्लोक 8 की फोटोकॉपी)

अभ्यासयोगयुक्तेन, चेतसा, नान्यगामिना,
परमम्, पुरुषम्, दिव्यम्, याति, पार्थ, अनुचिन्तयन्॥ ८॥

पार्थ = हे पार्थ! (यह नियम है कि)
अभ्यासयोगयुक्तेन = परमेश्वरके ध्यानके अभ्यासरूप योगसे युक्त
नान्यगामिना = दूसरी ओर न जानेवाले
चेतसा = चित्तसे
अनुचिन्तयन् = निरन्तर चिन्तन करता हुआ (मनुष्य)
परमम् = परम (प्रकाशस्वरूप)
दिव्यम् = दिव्य
पुरुषम् = पुरुषको अर्थात् परमेश्वरको (ही)
याति = प्राप्त होता है।

(गीता अध्याय 8 श्लोक 9 की फोटोकॉपी)

कविम्, पुराणम्, अनुशासितारम्, अणोः, अणीयांसम्,
अनुस्मरेत्, यः, ,सर्वस्य, धातारम्, अचिन्त्यरूपम्, आदित्यवर्णम्, तमसः, परस्तात् ॥ ९ ॥

यः	= जो पुरुष	**अचिन्त्यरूपम्**	= अचिन्त्यस्वरूप
कविम्	= सर्वज्ञ,	**आदित्यवर्णम्**	= सूर्यके सदृश नित्य चेतन प्रकाशरूप (और)
पुराणम्	= अनादि,	**तमसः**	= अविद्यासे
अनुशासितारम्	= सबके नियन्ता, *	**परस्तात्**	= अति परे शुद्ध सच्चिदानन्दघन परमेश्वरका
अणोः, अणीयांसम्	= सूक्ष्मसे भी अति सूक्ष्म,	**अनुस्मरेत्**	= स्मरण करता है—
सर्वस्य	= सबके		
धातारम्	= धारण-पोषण करनेवाले,		

(गीता अध्याय 8 श्लोक 10 की फोटोकॉपी)

प्रयाणकाले, मनसा, अचलेन, भक्त्या, युक्तः, योगबलेन,
च, एव, भ्रुवोः, मध्ये, प्राणम्, आवेश्य, सम्यक्, सः, तम्,
परम्, पुरुषम्, उपैति, दिव्यम् ॥ १० ॥

सः	= वह	**अचलेन**	= निश्चल
भक्त्या, युक्तः	= भक्तियुक्त पुरुष	**मनसा**	= मनसे
प्रयाणकाले	= अन्तकालमें (भी)	**(स्मरन्)**	= स्मरण करता हुआ
योगबलेन	= योगबलसे	**तम्**	= उस
भ्रुवोः	= भृकुटीके	**दिव्यम्**	= दिव्यरूप
मध्ये	= मध्यमें	**परम्**	= परम
प्राणम्	= प्राणको	**पुरुषम्**	= पुरुष परमात्माको
सम्यक्	= अच्छी प्रकार	**एव**	= ही
आवेश्य	= स्थापित करके	**उपैति**	= प्राप्त होता है—
च	= फिर		

इससे स्पष्ट हो जाता है कि ''हिन्दू नहीं समझे गीता का ज्ञान''।
{इसे समझे संत रामपाल दास विद्वान।}

➢ विशेष :- हिन्दू भाईयो! कबूतर के आँख बंद कर लेने से बिल्ली का खतरा टल नहीं जाता। यह उसका भ्रम होता है।

सच्चाई को आँखों देखो। स्वीकार करो। आप शिक्षित हो। 21वीं सदी के सभ्य व शिक्षित हो। आज दो सौ वर्ष पुराना भारत नहीं है। जिस समय अपने पूर्वज अशिक्षित व पूर्ण निर्मल आत्मा वाले थे। हमारे अज्ञानी धर्म प्रचारकों/मण्डलेश्वरों/मनीषियों/आचार्यों/शंकराचार्यों को पूर्ण विद्वान/गीता मनीषी मानकर इनकी झूठ पर अंध-विश्वास (Blind Faith) किया और इनके द्वारा बताई शास्त्र विधि त्यागकर मनमाना आचरण वाली भक्ति करके अनमोल जीवन नष्ट कर गए और हमने अपने पूर्वजों की परंपरा का निर्वाह आँखें बंद किए हुए शुरू कर दिया। पूरा पवित्र हिन्दू समाज इन तत्त्वज्ञानहीनों द्वारा भ्रमित है। अब तो आँखें खोलो। आप पुनः पढ़ें गीता। आप जानोगे कि गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि हे अर्जुन! जो शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण (भक्ति) करता है, उसे न तो सुख मिलता है, न उसको सिद्धि (सत्य शास्त्रानुकूल साधना से होने वाली कार्य सिद्धि) प्राप्त होती है, न उसकी गति (मोक्ष) होती है।

❖ विचार करें हिन्दू भाईजान! भक्ति इन्हीं तीन वस्तुओं के लिए की जाती है। 1. जीवन में सुख मिले। 2. कार्य सिद्ध हों, कोई संकट न आए। 3. मोक्ष मिले। शास्त्र में न बताई साधना व भक्ति करने से ये तीनों नहीं मिलेंगी। इसलिए जो गीता में नहीं करने को कहा, वह नहीं करना चाहिए। गीता अध्याय 16 के श्लोक 24 में यह भी स्पष्ट कर दिया है। कहा है कि :-

गीता अध्याय 16 श्लोक 24 :- इससे तेरे लिए हे अर्जुन! कर्तव्य (कौन-सी साधना करनी चाहिए) तथा अकर्तव्य (कौन-सी साधना नहीं करनी चाहिए) में शास्त्र ही प्रमाण हैं।

❖ हिन्दू धर्मगुरू व प्रचारक आचार्य, शंकराचार्य तथा गीता मनीषी गीता ज्ञान देने वाले (जिसे ये श्री विष्णु का अवतार श्री कृष्ण कहते हैं) को अविनाशी बताते हैं। कहते हैं इनका जन्म-मृत्यु नहीं होता। इनके कोई माता-पिता नहीं हैं जो झूठ है।

आप देखें स्वयं गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 4 श्लोक 5, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान देने वाला (इनके अनुसार श्री विष्णु उर्फ श्री कृष्ण जी) कहता है कि ''हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ।(गीता अध्याय 4 श्लोक 5)

❖ हे अर्जुन! ऐसा नहीं है कि मैं-तू तथा ये सब राजा व सैनिक पहले नहीं थे या आगे नहीं होंगे। अर्थात् मैं (गीता ज्ञान दाता) तू (अर्जुन) तथा ये सब सैनिक आदि-आदि सब पहले भी जन्मे थे, आगे भी जन्मेंगे।(गीता अध्याय 2 श्लोक 12)

❖ मेरी उत्पत्ति को न तो ऋषिजन जानते हैं, न सिद्धगण तथा न देवता जानते हैं

क्योंकि मैं इन सबका आदि कारण (उत्पत्तिकर्ता) हूँ।(गीता अध्याय 10 श्लोक 2)

❖ हिन्दू भाईजान! कृपया पढ़ें फोटोकॉपी श्रीमद्भगवत गीता पदच्छेद अन्वय के उपरोक्त श्लोकों की यानि गीता अध्याय 16 श्लोक 24, गीता अध्याय 4 श्लोक 5, गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 जो गीता प्रैस गोरखपुर से मुद्रित है तथा श्री जयदयाल गोयन्दका द्वारा अनुवादित है :-

(गीता अध्याय 16 श्लोक 24 की फोटोकॉपी)

तस्मात्, शास्त्रम्, प्रमाणम्, ते, कार्याकार्यव्यवस्थितौ,
ज्ञात्वा, शास्त्रविधानोक्तम्, कर्म, कर्तुम्, इह, अर्हसि॥ २४॥

तस्मात्	= इससे	**प्रमाणम्**	= प्रमाण है।
ते	= तेरे लिये	**(एवम्)**	= ऐसा
इह	= इस	**ज्ञात्वा**	= जानकर (तू)
कार्याकार्यव्यवस्थितौ	= कर्तव्य और अकर्तव्यकी व्यवस्थामें	**शास्त्रविधानोक्तम्**	= शास्त्रविधिसे नियत
		कर्म	= कर्म (ही)
शास्त्रम्	= शास्त्र (ही)	**कर्तुम्**	= करने
		अर्हसि	= योग्य है।

(गीता अध्याय 2 श्लोक 12 की फोटोकॉपी)

न, तु, एव, अहम्, जातु, न, आसम्, न, त्वम्, न, इमे, जनाधिपाः,
न, च, एव, न, भविष्यामः, सर्वे, वयम्, अतः, परम्॥ १२॥

न	= न	**न**	= नहीं
तु	= तो	**(आसन्)**	= थे
(एवम्)	= ऐसा	**च**	= और
एव	= ही (है कि)	**न**	= न
अहम्	= मैं	**(एवम्)**	= ऐसा
जातु	= किसी कालमें	**एव**	ही (है कि)
न	= नहीं		
आसम्	= था (अथवा)	**अतः**	= इससे
त्वम्	= तू	**परम्**	= आगे
न	= नहीं	**वयम्**	= हम
(आसीः)	= था (अथवा)	**सर्वे**	= सब
इमे	= ये	**न**	= नहीं
जनाधिपाः	= राजालोग	**भविष्यामः**	= रहेंगे।

(गीता अध्याय 4 श्लोक 5 की फोटोकॉपी)

बहूनि, मे, व्यतीतानि, जन्मानि, तव, च, अर्जुन,
तानि, अहम्, वेद, सर्वाणि, न, त्वम्, वेत्थ, परन्तप ॥ ५ ॥

इसपर श्रीभगवान् बोले—

परन्तप	= हे परन्तप	**व्यतीतानि**	= हो चुके हैं।
अर्जुन	= अर्जुन!	**तानि**	= उन
मे	= मेरे	**सर्वाणि**	= सबको
च	= और	**त्वम्**	= तू
तव	= तेरे	**न**	= नहीं
बहूनि	= बहुत-से	**वेत्थ**	= जानता, (किंतु)
जन्मानि	= जन्म	**अहम्**	= मैं
		वेद	= जानता हूँ।

(गीता अध्याय 10 श्लोक 2 की फोटोकॉपी)

न, मे, विदुः, सुरगणाः, प्रभवम्, न, महर्षयः,
अहम्, आदिः, हि, देवानाम्, महर्षीणाम्, च, सर्वशः ॥ २ ॥

हे अर्जुन!—

मे	= मेरी	**विदुः**	= जानते हैं;
प्रभवम्	= उत्पत्तिको अर्थात् लीलासे प्रकट होनेको	**हि**	= क्योंकि
		अहम्	= मैं
न	= न	**सर्वशः**	= सब प्रकारसे
सुरगणाः	= देवतालोग (जानते हैं और)	**देवानाम्**	= देवताओंका
		च	= और
न	= न	**महर्षीणाम्**	= महर्षियोंका (भी)
महर्षयः	= महर्षिजन (ही)	**आदिः**	= आदि कारण हूँ।

➢ विचार करें पाठकजन! जो जन्मता-मरता है, वह अविनाशी नहीं है, नाशवान है। नाशवान समर्थ नहीं होता।

प्रश्न :- यदि गीता ज्ञान देने वाला (श्री विष्णु उर्फ श्री कृष्ण जी) जन्मता-मरता है यानि नाशवान है तो अविनाशी यानि जन्म-मरण से रहित कौन प्रभु है जो गीता ज्ञान दाता से अन्य है?

उत्तर :- यह उत्तर गीता अध्याय 2 श्लोक 17 तथा गीता अध्याय 15 के श्लोक 16-17 में तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 46, 61 तथा 62 में है।

गीता अध्याय 2 श्लोक 17 :- (गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमेश्वर की महिमा कही है।) नाशरहित तो उसको जान जिससे यह सम्पूर्ण जगत व्याप्त है। इस अविनाशी का विनाश करने में कोई भी समर्थ नहीं है। {गीता अध्याय 18 श्लोक 46 में भी अपने से अन्य परमेश्वर की महिमा गीता ज्ञान दाता ने बताई है।}

❖ गीता अध्याय 18 श्लोक 46 :- जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है (और) जिससे यह सम्पूर्ण जगत व्याप्त है। अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

❖ गीता अध्याय 18 श्लोक 61 :- {गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमेश्वर की महिमा बताई है।}

हे अर्जुन! शरीर रूप यंत्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को परमेश्वर अपनी माया से (उनके कर्मों के अनुसार) भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थित है।

❖ गीता अध्याय 18 श्लोक 62 :- {इस श्लोक में गीता ज्ञान दाता ने अर्जुन को उपरोक्त अपने से अन्य परमेश्वर की शरण में सर्व भाव से जाने के लिए कहा है।}

हे भारत! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से (ही तू) परम शांति को (तथा) सनातन परम धाम यानि सत्यलोक (अमर स्थान) को प्राप्त होगा।

''गीता ज्ञान दाता से अन्य व अविनाशी तथा सबका धारण-पोषण करने वाले परमेश्वर का प्रमाण केवल वही परमात्मा है, का प्रमाण''

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में :-

गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में कहा है कि इस संसार में दो पुरूष (प्रभु) हैं। एक क्षर पुरूष तथा दूसरा अक्षर पुरूष। ये दोनों तथा इनके अंतर्गत सब प्राणी नाशवान हैं।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में गीता ज्ञान देने वाले ने स्पष्ट कर दिया है कि :-

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 :- उत्तम पुरूष यानि श्रेष्ठ परमेश्वर तो उपरोक्त क्षर पुरूष और अक्षर पुरूष से अन्य ही है जो परमात्मा कहा जाता है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है और वही अविनाशी परमेश्वर है।

❖ हिन्दू भाईजान! कृपया पढ़ें प्रमाण के लिए उपरोक्त श्लोकों की फोटोकॉपी श्रीमद्भगवद गीता पदच्छेद, अन्वय से जो गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित है तथा श्री जयदयाल गोयन्दका द्वारा अनुवादित है :-

(गीता अध्याय 2 श्लोक 17 की फोटोकॉपी)

अविनाशि, तु, तत्, विद्धि, येन्, सर्वम्, इदम्, ततम्,
विनाशम्, अव्ययस्य, अस्य, न, कश्चित्, कर्तुम्, अर्हति॥ १७॥

इस न्यायके अनुसार—

अविनाशि	= नाशरहित	**ततम्**	= व्याप्त है।
तु	= तो (तू)	**अस्य**	= इस
तत्	= उसको	**अव्ययस्य**	= अविनाशीका
विद्धि	= जान,	**विनाशम्**	= विनाश
येन	= जिससे	**कर्तुम्**	= करनेमें
इदम्	= यह		
सर्वम्	= सम्पूर्ण जगत् (दृश्यवर्ग)	**कश्चित्**	= कोई भी
		न, अर्हति	= समर्थ नहीं है।

(गीता अध्याय 18 श्लोक 46 की फोटोकॉपी)

यतः, प्रवृत्तिः, भूतानाम्, येन्, सर्वम्, इदम्, ततम्,
स्वकर्मणा, तम्, अभ्यर्च्य, सिद्धिं, विन्दति, मानवः॥ ४६॥

यतः	= जिस परमेश्वरसे	**तम्**	= उस परमेश्वरकी
भूतानाम्	= सम्पूर्ण प्राणियोंकी	**स्वकर्मणा**	= अपने स्वाभाविक कर्मोंद्वारा
प्रवृत्तिः	= उत्पत्ति हुई है (और)		
येन	= जिससे	**अभ्यर्च्य**	= पूजा करके[२]
इदम्	= यह	**मानवः**	= मनुष्य
सर्वम्	= समस्त (जगत्)	**सिद्धिम्**	= परम सिद्धिको
ततम्	= व्याप्त है*,	**विन्दति**	= प्राप्त हो जाता है।

(गीता अध्याय 18 श्लोक 61 की फोटोकॉपी)

ईश्वरः, सर्वभूतानाम्, हृद्देशे, अर्जुन, तिष्ठति,
भ्रामयन्, सर्वभूतानि, यन्त्रारूढानि, मायया ॥ ६१ ॥

क्योंकि—

अर्जुन = हे अर्जुन!

यन्त्रारूढानि = शरीररूप यन्त्रमें आरूढ़ हुए

सर्वभूतानि = सम्पूर्ण प्राणियोंको

ईश्वरः = अन्तर्यामी परमेश्वर

मायया = अपनी मायासे

(उनके कर्मोंके अनुसार)

भ्रामयन् = भ्रमण कराता हुआ

सर्वभूतानाम् = सब प्राणियोंके

हृद्देशे = हृदयमें

तिष्ठति = स्थित है।

(गीता अध्याय 18 श्लोक 62 की फोटोकॉपी)

तम्, एव, शरणम्, गच्छ, सर्वभावेन, भारत,
तत्प्रसादात्, पराम्, शान्तिम्, स्थानम्, प्राप्स्यसि, शाश्वतम् ॥ ६२ ॥

इसलिये—

भारत = हे भारत! (तू)

सर्वभावेन = सब प्रकारसे

तम् = उस परमेश्वरकी

एव = ही

शरणम् = शरणमें*

गच्छ = जा।

तत्प्रसादात् = उस परमात्माकी कृपासे (ही तू)

पराम् = परम

शान्तिम् = शान्तिको (तथा)

शाश्वतम् = सनातन

स्थानम् = परम धामको

प्राप्स्यसि = प्राप्त होगा।

(गीता अध्याय 15 श्लोक 16 की फोटोकॉपी)

द्वौ, इमौ, पुरुषौ, लोके, क्षरः, च, अक्षरः, एव, च,
क्षरः, सर्वाणि, भूतानि, कूटस्थः, अक्षरः, उच्यते ॥ १६ ॥

तथा हे अर्जुन!—

लोके	= इस संसारमें	**सर्वाणि**	= सम्पूर्ण
क्षरः	= नाशवान्	**भूतानि**	= भूतप्राणियोंके शरीर (तो)
च	= और		
अक्षरः	= अविनाशी	**क्षरः**	= नाशवान्
एव	= भी—	**च**	= और
इमौ	= ये	**कूटस्थः**	= जीवात्मा
द्वौ	= दो प्रकारके*	**अक्षरः**	= अविनाशी
पुरुषौ	= पुरुष हैं।(इनमें)	**उच्यते**	= कहा जाता है।

(गीता अध्याय 15 श्लोक 17 की फोटोकॉपी)

उत्तमः, पुरुषः, तु, अन्यः, परमात्मा, इति, उदाहृतः,
यः, लोकत्रयम्, आविश्य, बिभर्ति, अव्ययः, ईश्वरः ॥ १७ ॥

तथा इन दोनोंसे—

उत्तमः	= उत्तम	**बिभर्ति**	= सबका धारण-पोषण करता है (एवं)
पुरुषः	= पुरुष		
तु	= तो	**अव्ययः**	= अविनाशी,
अन्यः	= अन्य ही है,	**ईश्वरः**	= परमेश्वर (और)
यः	= जो	**परमात्मा**	= परमात्मा
लोकत्रयम्	= तीनों लोकोंमें	**इति**	= इस प्रकार
आविश्य	= प्रवेश करके	**उदाहृतः**	= कहा गया है।

➢ भ्रम निवारण :- गीता अध्याय 15 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि मैं लोकवेद (दंत कथा) के आधार से पुरूषोत्तम प्रसिद्ध हूँ क्योंकि मैं अपने अंतर्गत सब प्राणियों से उत्तम हूँ।

➢ विचार करो :- गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में परम अक्षर ब्रह्म

(पुरूष) अपने से अन्य बताया है। श्लोक 5-7 में अपनी भक्ति करने को कहा है तथा गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 8-9-10 में अपने से अन्य परम अक्षर ब्रह्म यानि परम अक्षर पुरूष/सच्चिदानंद घन ब्रह्म यानि दिव्य परम पुरूष (परमेश्वर) की भक्ति करने को कहा है। गीता अध्याय 8 श्लोक 9 में भी उसी को सबका धारण-पोषण करने वाला बताया है। इसी प्रकार गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में अपने से अन्य परम अक्षर पुरूष को पुरूषोत्तम कहा है। उसी को सबका धारण-पोषण करने वाला अविनाशी कहा है। फिर गीता अध्याय 15 श्लोक 18 में अपनी स्थिति बताई है कि मैं तो लोक वेद (सुनी-सुनाई बातों/दंत कथाओं) के आधार से पुरूषोत्तम प्रसिद्ध हूँ। {वास्तव में पुरूषोत्तम तो ऊपर गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में बता दिया है।}

कुछेक व्यक्ति श्लोक 18 को पढ़कर कहते हैं कि देखो! गीता ज्ञान देने वाला अपने को पुरूषोत्तम कह रहा है। इससे अन्य कोई पुरूषोत्तम नहीं है। उसकी मूर्ख सोच का उत्तर ऊपर स्पष्ट कर दिया है।

प्रश्न :- शास्त्रों में कौन-से भक्ति कर्म (कर्तव्य) करने योग्य तथा कौन-से कर्म (अकर्तव्य) न करने योग्य हैं?

उत्तर :- श्रीमद्भगवद् गीता में गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में गीता ज्ञान देने वाले प्रभु ने अपनी भक्ति/पूजा का केवल एक अक्षर ॐ (ओम्) स्मरण करने का बताया है। इसके अतिरिक्त अन्य नाम (अकर्तव्य) न जाप करने वाले हैं।

गीता अध्याय 3 श्लोक 10-15 में यज्ञ करना (कर्तव्य) करने योग्य भक्ति कर्म कहा है। उनमें (परम अक्षर ब्रह्म) अविनाशी परमात्मा को ईष्ट रूप में प्रतिष्ठित करने को कहा है।

➢ यज्ञ पाँच प्रकार की हैं :- 1. धर्म यज्ञ 2. ध्यान यज्ञ 3. हवन यज्ञ 4. प्रणाम यज्ञ 5. ज्ञान यज्ञ।

इनको करने की विधि तत्त्वदर्शी संत बताता है। यह प्रमाण गीता अध्याय 4 श्लोक 32-33-34 में भी है। कहा है कि सच्चिदानंद घन ब्रह्म अपने मुख कमल से बोली वाणी में तत्त्वज्ञान बताता है। उससे पूर्ण मोक्ष होता है। उसको जानकर तू कर्म बंधन से सर्वथा मुक्त हो जाएगा।(गीता अध्याय 4 श्लोक 32)

गीता अध्याय 4 श्लोक 33 :- हे परंतप अर्जुन! द्रव्यमय (धन से खर्च करके की जाने वाली) यज्ञ से ज्ञान यज्ञ यानि तत्त्वदर्शी संत का सत्संग सुनना अधिक श्रेष्ठ है। क्योंकि तत्त्वदर्शी संत धर्म-कर्म व जाप आदि करने की शास्त्रोक्त विधि बताता है। जैसे बिना ज्ञान के कर्ण (छठा पांडव) ने केवल सोना (Gold) ही दान किया। उससे उसको स्वर्ग में सोने (Gold) के पर्वत पर छोड़ दिया। उसे भूख लगी तो भोजन माँगा। उसे बताया गया कि

आपने अन्न दान (धर्म यज्ञ) नहीं किया। केवल सोना दान किया। इसलिए भोजन नहीं मिलेगा। यदि तत्त्वदर्शी संत मिला होता तो कर्ण पाँचों यज्ञ करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त करता। इसलिए गीता अध्याय 4 श्लोक 33 में कहा है कि द्रव्यमय यज्ञ से ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ है यानि (ज्ञान यज्ञ) तत्त्वदर्शी संत का ज्ञान सुनने से पता चलता है कि शास्त्रविधि अनुसार कौन से भक्ति कर्म हैं?

गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि उस तत्त्वज्ञान को जो सच्चिदानंद घन परमात्मा अपने मुख से वाणी बोलकर बताता है, उस वाणी में लिखा है। उसको तत्त्वदर्शी संतों के पास जाकर समझ। उनको भली-भांति दण्डवत् प्रणाम करने से उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्त्व को जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

वह तत्त्वज्ञान मेरे (लेखक-रामपाल दास के) पास है जो सूक्ष्मवेद (स्वसमवेद) में स्वयं सच्चिदानंद घन ब्रह्म कबीर जी ने अपने मुख कमल से बोली वाणी यानि कबीर वाणी में बोलकर बताया है जो श्री धर्मदास जी (बांधवगढ़ वाले) ने लिखा है। फिर परमेश्वर कबीर जी ने वही ज्ञान अपनी प्रिय आत्मा संत गरीबदास जी को बताया था तथा अपना सत्यलोक दिखाया था। फिर संत गरीबदास जी ने आँखों देखी महिमा कबीर जी की बताई है। सूक्ष्मवेद में सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञान है। चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) का ज्ञान सूक्ष्मवेद से लिया गया है। परंतु अधिक ज्ञान छोड़ा गया है। उसकी पूर्ति करने के लिए परमेश्वर स्वयं पृथ्वी पर आए थे। सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञान बताया था।

➢ सम्पूर्ण तथा अधिक जानकारी के लिए हिन्दू भाईजान कृपया पढ़ें पुस्तक ''गीता तेरा ज्ञान अमृत'' जो लेखक {संत रामपाल दास जी महाराज (सतलोक आश्रम बरवाला)} द्वारा लिखी है जिसकी कीमत मात्र 20/- रूपये है। यदि आप इस पुस्तक को निःशुल्क मंगवाना चाहते हैं तो कृपया अपना पूरा नाम, पता हमें नीचे दिए नंबर पर SMS या Whatsapp करें। यह पुस्तक बिल्कुल फ्री दी जाएगी। डाक खर्च भी आपको नहीं देना होगा। अन्य पुस्तकें ज्ञान गंगा, जीने की राह, अंध श्रद्धा भक्ति खतरा-ए-जान भी SMS या Whatsapp द्वारा निःशुल्क मंगवाई जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त उपरोक्त तथा अन्य सभी पुस्तकें हमारी WEBSITE या संत रामपाल जी महाराज एप से निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं। हमारी वेबसाईट है :- www.jagatgururampalji.org

सत्संग सुनने के लिए Youtube पर सर्च करें ''Sant Rampal Ji Maharaj Channel''

SMS या Whatsapp करने के लिए हमारा सम्पर्क सूत्र :- 7496801825